संपादकीय

महत्वपूर्ण एवं खास

जातिगत आरक्षण की सियासी रस्साकशी

राजस्थान, हरियाणा, महाराष्ट्र तथा गुजरात सहित भारत के कई राज्यों में अन्य पिछड़े वर्गों तथा जातियों के लिए आरक्षण के नाम पर कई तरह के आंदोलन चल रहे हैं। आरक्षण समर्थकों की मांग है कि गुज्जरों, जाटों, मराठों तथा पाटीदारों जैसी पिछड़ी जातियों के लिए सरकारी नौकरियों तथा शिक्षण संस्थाओं में दाखिले के लिए अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों तथा अन्य पिछड़े वर्गों और जातियों की तरह ही प्रतिशत आधारित कोटा आरक्षित होना चाहिए। 'पिछड़ी जातियों' के लिए विशेष आराक्षण की मांग को लेकर हाल के ये आंदोलन भारत के उन उत्तर तथा उत्तर-पश्चिमी राज्यों में हुए हैं जहां कि भाजपा का शासन है। ऐसे में हिंदुओं के प्रतिनिधित्व का दावा करने वाली पार्टी को इस मांग का जवाब देने में बड़ी दिक्कत पेश आ रही है। इस परिदृश्य में व्यापक प्रश्न ये उठ खड़ा होता है कि जाति बनाम जातिगत राजनीति के माहौल में एक जाति की मांग को पूरा करने का मतलब होगा दूसरी जाति के विरोधी पक्ष के साथ जा खड़ा होना। क्योंकि भाजपा की किस्म का हिंदुत्व 'अखंड' नहीं है और इस मिथक को ओबीसी वर्ग ने भारत के विभिन्न राज्यों में तोड़ डाला है। एक विश्लेषणात्मक प्रश्न, जिसका कि समाधान जरूरी है, वह यह है कि विभिन्न जातीय ग्रुप पटल पर क्यों उभर आते हैं और फिर सरकारी संस्थानों में जाति के आधार पर आरक्षण की मांग करने लगते हैं। अछूतों के लिए आरक्षण स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी तथा उनके करीबी साथियों की 'नैतिक सोच' पर आधारित था। अन्य पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षण के पक्षधर 'मध्यम पिछड़ी खेतिहर जातियों' के लिए आरक्षण की मांग करते वक्त 'उच्च नैतिक धरातल' पर टिक नहीं सके। मध्यम पिछड़ी कृषक जातियों' ने राजनीतिक ताकत हासिल कर ली है और या तो उनकी अपनी जाति-आधारित

पार्टियां हैं या फिर राष्ट्रीय स्तर की पार्टियों में उनका बहुत प्रभाव है। अकाली दल, लोक दल, जनता पार्टी या फिर समाजवादी पार्टी आदि जैसी सभी महत्वपूर्ण क्षेत्रीय पार्टियां यादवों, जाटों या मराठों जैसी प्रमुख मध्यम पिछड़ी जातियों द्वारा नियंत्रित हैं। केन्द्र सरकार विपक्षी पार्टियों के विरोध के बावजूद पिछड़े वर्गों के राष्ट्रीय आयोग को राष्ट्रीय अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति आयोग के समान संवैधानिक दर्जा देने के उद्देश्य से संविधान विधेयक (123वां संशोधन) 2017 लेकर आई। सरकार की इस कार्रवाई ने आरक्षण सूची में शामिल किये जाने वाले उप-जातीय पिछड़ों की पहचान के लिए पिछड़े वर्गों/जातियों को एक अलग सामाजिक वर्ग बना दिया है। ऐसे में आश्चर्य वाली बिल्कुल भी कोई बात नहीं है कि भारत के किसी न किसी प्रदेश में आरक्षण के लिए नियमित अंतराल पर जातीगत आंदोलन होते ही रहते हैं। भारत को अगर जातिवाद की बुराई से छुटकारा पाना है तो जाति आधारित आरक्षण नीतियों को त्यागना होगा और सिर्फ अछूत दलित जातियों को ही विशेष छूट देनी होगी क्योंकि ऊंची तथा पिछड़ी जातियों के हिंदू आज भी असल दलितों पर अत्याचार कर रहे हैं। इसलिए अछूतों को विशेष अधिकार देने के अलावा अन्य सभी देशवासियों को सरकारी नौकरियों के लिए धर्म, जाति अथवा संप्रदाय की परवाह किये बिना भारतीय नागरिकों के रूप में मुकाबला करना चाहिए। अगर सरकार जातियों तथा उप-जातियों को 'संरक्षण' और कोटे के आधार पर सरकारी पद बांटना जारी रखती है तो फिर भारत जाति और जातिवाद की बुराई से छुटकारा नहीं पा सकता है।

जहरीले धुएं की जकड़न

सर्दियों की आहट के साथ उत्तर भारत में धुंध लौट आई है. दिल्ली-एनसीआर में तो हालात सबसे ज्यादा खराब है. केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) ने इधर दिल्ली के कई इलाकों समेत, आनंद विहार, गाजियाबाद और नोएडा में हवा की गुणवत्ता के सूचकांक को 'गंभीर' अवस्था जताते हुए दर्ज किया है. उल्लेखनीय है कि इस धुंध में पंजाब-हरियाणा के खेतों में जलाई गई पराली का योगदान न के बराबर है, क्योंकि उधर से हवा की कोई ऐसी लहर इस दौरान यहां नहीं आई जो स्मॉग अपने संग ले आती. खुद दिल्ली-एनसीआर में सर्वोच्च अदालत के निर्देश के बाद पटाखों को जलाने से भी काफी परहेज बरता गया. तो सवाल है कि यह धुंध आखिर कहां से आई? असल में इसके पीछे है इस पूरे इलाके में हर रोज बढ़ती कारों की संख्या.

दिल्ली और इसके निकटवर्ती शहरों में बढ़ते निजी वाहनों से जहां सड़कों पर दबाव बढ़ा है, उनसे निकलने वाले जहरीले प्रदूषण की मात्रा में भी भयानक इजाफा हुआ है. 2016 बीतते-बीतते राजधानी दिल्ली की सरकार निजी कारों से जुड़ा आंकड़ा पेश करके बताया था कि वर्ष 2015-20ही16 के बीच इस महानगर में वाहनों की संख्या 97 लाख पार कर गई है. 2014-15 में यह संख्या 88 लाख थी जो कि एक ही साल में 9.93 फीसद बढ़कर एक करोड़ के करीब पहुंच गई. इन निजी वाहनों में सबसे बड़ी संख्या कारों की है, जिसका उपभोक्ता शहरी मध्यवर्ग है. मध्यवर्गीय तबके ने चार से पांच लाख की कार वैसे तो एक स्टेटस सिंबल या सपने के तहत ही खरीदी थी, लेकिन बढ़ती महानगरीय दूरियों और पब्लिक ट्रांसपोर्ट की खामियों के चलते कारण वह उसकी अनिवार्य जरूरतों में शामिल हो गई है. भारतीय शहरों में ट्रैफिक जाम और वाहनों से निकलने वाले प्रदूषण ने लोगों को सांस लेना मुश्किल कर दिया है. इसके कारण आम लोगों की जिंदगी औसतन तीन साल तक कम हो रही है.इस बारे में एक अध्ययन यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो, हार्वर्ड और येल के अर्थशास्त्रियों का है. इसके मुताबिक देश के करीब 66 करोड़ लोग उन क्षेत्रों में रहते हैं, जहां की हवा में मौजूद सूक्ष्म कण पदाथरे (पार्टिकुलेट मैटर) का प्रदूषण भारत के ही सुरक्षित मानकों से ऊपर है. विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू एच ओ) वर्ष 2014 के एक सर्वे में यह भी बता चुका है कि दुनिया के 20 सबसे प्रदूषित शहरों में से 13 शहर भारत में हैं. दिल्ली से बाहर मेट्रो का इतना विस्तार नहीं हुआ है कि सभी लोग आसानी से दिल्ली पहुंच सकें. मेट्रो की अपनी सीमाएं भी है. दिल्ली-एनसीआर में तो लोग मेट्रो स्टेशन तक पहुंचने के लिए भी कारों का इस्तेमाल करते हैं. मेट्रो के बरक्स पब्लिक ट्रांसपोर्ट के रूप में बसें लोगों को ऐसी सहूलियत मुहैया नहीं करा पा रही हैं कि वे कार खरीद को तिलांजलि दे सकें. जब तक कारों की तादाद काबू में नहीं लाई जाती, ट्रैफिक जाम से लेकर धुंध के कहर-जहर को रोकना तकरीबन नामुमकिन ही है

जामफल के ठेले पर बड़ा व्यापारी

यह ऐसा संस्मरण है जिसे मैं आसमान पर लिख देना चाहता हूं। उज्जैन-बड़नगर के लगभग ठीक बीच में एक कस्बा आता है इंगोरिया। यहां के और बड़नगर के जामफल यहां बहुत प्रसिद्ध हैं। मैं भोपाल से लौट रहा था। हमारी टैक्सी उज्जैन पार कर बड़नगर की तरफ बढ़ रही थी। इंगोरिया बस स्टैंड पर जामफल के पांच-सात ठेले खड़े थे। ड्राइवर ने एक ठेले के सामने गाड़ी रोकी। कोई बाईस-तेईस वर्षीय युवक के इस ठेले पर बहुत थोड़े जामफल बचे थे। छांटते-छांटते, तीन जामफल बाकी बचे रहे और बाकी सब तौल में चढ़ गए। उसने वे तीन जामफल भी चार किलो में शरीक कर दिए। उसे दो सौ रुपये दिये गये। वह पैसा लौटाने लगा, मैंने कहा रहने दे भाई, 50 रुपये किलो के हिसाब से यही बना। वह ठिठका। अविश्वास भाव से मुझे देखा। लेकिन अगले ही पल चालीस रुपये मेरी ओर बढ़ाते हुए बोला- तब तक दस-दस के चार नोट वह मेरी ओर बढ़ा चुका था। अब मेरे सामने जामफल के ठेलेवाला, देहाती लड़का नहीं, अपनी बात का धनी, ईमानदार व्यापारी खड़ा था। मन में सोचा अगली बार उससे नाम पूछ लूंगा। फोटू भी खिंचवाऊंगा। सबसे कहूंगा–'इसे देखो! धन्ना सेठो, नेताओं और अफसरों की बेईमानियों के नासूर से यह नौजवान देश को मुक्ति दिलाएगा।'

लोकतंत्र की जय

परिणाम तो अगले महीने 18 तारीख को मतगणना के बाद ही पता चलेगा, लेकिन हिमाचल प्रदेश के मतदाताओं ने जिस प्रतिबद्धता के साथ अपने मताधिकार का प्रयोग किया है, उसकी प्रशंसा की जानी चाहिए। पहाड़ी राज्यों के जन जीवन की जटिलता के मद्देनजर तो यह और भी काबिले तारीफ है कि हिमाचल के मतदाताओं ने बृहस्पतिवार को नयी राज्य सरकार के लिए हुए मतदान में नया रिकॉर्ड ही बना दिया। निश्चय ही यह लोकतंत्र में गहरी आस्था का भी प्रमाण है, जो राजनीतिक दलों-नेताओं के कई बार निराशाजनक और शर्मनाक आचरण के बावजूद अटूट बनी हुई है। दुष्कर जनजीवन वाले पर्वतीय राज्य हिमाचल में 75 प्रतिशत मतदान अपेक्षाकृत आसान जीवन वाले मैदानी राज्यों, खासकर उन शहरी क्षेत्रों के लिए आत्मविश्लेषण का सबक भी होना चाहिए, जहां मतदान का प्रतिशत 50-60 के आसपास ही अटक जाता है। चुनाव लोकतंत्र की प्राणवायु है तो मतदाता प्राथमिक इकाई। ऐसे में मतदाताओं की अपने मताधिकार के प्रति उदासीनता के खतरे आसानी से समझे जा सकते हैं। देश के पहले मतदाता श्याम सरण नेगी के राज्य के मतदाता इस बात के लिए निश्चय ही बधाई के पात्र हैं कि लोकतंत्र और चुनावी यज्ञ में उनकी भागीदारी लगातार बढ़ती ही जा रही है। देश के पहले मतदाता के स्वागत में लाल कालीन बिछा कर चुनाव आयोग ने भी सर्वथा उचित ही किया। इलेक्ट्रोनिक वोटिंग मशीनों की विश्वसनीयता पर उठते सवालों के बीच देश में पहली बार हिमाचल विधानसभा चुनावों में वीवीपैट का भी इस्तेमाल किया गया। इस प्रक्रिया में कुल 79 वीवीपैट के अलावा 33 बैलेट यूनिट और 29 कंट्रोल यूनिट खराब होने की शिकायत दरअसल चुनाव आयोग के लिए एक सबक भी है आगामी चुनावों में बेहतर तैयारी के लिए। चुनावों और उससे निकले जनादेश की सार्थकता के लिए भी जरूरी है कि चुनाव प्रक्रिया स्वतंत्र और निष्पक्ष हो। हिमाचल प्रदेश देश के उन राज्यों में शामिल है, जहां वास्तव में दो दलीय राजनीति है। बीच-बीच में क्षेत्रीय दल या निर्दलीय अपनी उपस्थिति दर्ज तो करवाते हैं, पर स्थाई पहचान नहीं बना पाते। इसलिए 12 जिलों की 68 सीटों पर 337 उम्मीदवारों की मौजूदगी के बीच भी यह आईने की तरह साफ है कि राज्य की भावी सत्ता के लिए मुकाबला कांग्रेस और भाजपा के बीच ही है।

प्रकृति बचाने से होगी संस्कृति की रक्षा

मेरी दूसरी इच्छा है घूमना। मैं खूब घूमता हूं और जंगल, नदी, पहाड़, समुद्र देख कर तमाम तरह की अजीबो-गरीब कल्पनाएं करने लगता हूं। एक बार सितम्बर के महीने में मुंबई से कोझीकोड जाते समय हमारा जहाज जब अरब सागर के ऊपर से उड़ रहा था तब समुद्र और जहाज के बीच बादल इस तरह छितराए हुए थे मानों हम परियों के देश में हों। इच्छा हो रही थी कि जहाज यहीं खड़ा हो जाए और इन बादलों के बीच रेस लगाऊं। जो लोग प्रकृति से प्रेम करते हैं, उनके अंदर ऐसी इच्छा का होना स्वाभाविक है। दिल्ली से चेन्नई जाने के लिए वाया इटारसी में लाइन वाले रास्ते में भोपाल से आगे बढ़कर ट्रेन जैसे ही घोड़ा डोंगरी की टनल पार करती है, तब पटरी के दोनों तरफ घने शाल के पेड़ों के चौड़े पत्ते आपका मन मोह लेते हैं। प्रकृति की यह माया इतनी विचित्र है कि वह कभी इस बात का अहसास नहीं होने देती कि इन चौड़े पत्तों के नीचे हजारों फीट गहरी खाई है। भारत में ऐसे जंगल, खाई और पहाड़ भरे पड़े हैं। यही है प्रकृति की माया। इस तरह से अकेले सतपुड़ा के जंगल ही नहीं लुभाते हैं बल्कि झारखण्ड में छोटा नागपुर इलाके के वन भी ऐसा ही मायावी दृश्य प्रस्तुत करते हैं। ठीक इसी तरह जोशीमठ के आगे हेमकुंड और फूलों की घाटी के रास्ते का दृश्य आदमी को अपने मोहपाश में जकड़ लेता है। यह सब इसलिए संभव है क्योंकि हमने अपने पूर्वजों से सीखा है कि हरे वृक्ष काटना मना है। पूर्वी घाट में ओडिशा से लेकर आंध्र का तट इसी बात का अहसास कराते हैं। और केरल की हरियाली देख कर लगता है कि वाकई इसे खुद ईश्वर ने बनाया होगा। इसीलिए केरल वासी अपनी धरती को ईश्वर का अपना घर बताते हैं। एक दिन ऐसे ही गांव जाते समय मैंने ट्रेन का रूट पकड़ा जो कानपुर-झांसी रेलखंड पर था। ट्रेन से हमें जिस स्टेशन तिलौंची नाम के स्टेशन पर उतरना होता था, वहां से गांव करीब दस किमी था और वह पूरा रास्ता पैदल ही तय करना पड़ता। यह रास्ता एक नहर के किनारे-किनारे जाता। मेरे साथ मेरे एक मित्र भी तब मेरे गांव को चल रहे थे। नहर के किनारे हम लोग पैदल चले जा रहे थे। बारिश के कारण नहर की पटरी में फिसलन थी इसलिए हम लोगों ने नहर के पानी के साथ-साथ उगी घास पर चलने का निश्चय किया। तिलौंची से कुछ दूर आगे जाकर दो नहरें एक नहर और एक रजबहा साथ-साथ बहते हैं। कब से ऐसा है, अब यह तो पता नहीं लेकिन सुना है कि हमारे परदादा इसी नहर के किनारे-किनारे चलते हुए बुंदेलखंड के झांसी से आकर यहां बसे थे। और हम बुजुर्गों से सुनते आ रहे थे कि ये दोनों नहरें तब भी थीं। नहर और रजबाहे के बीच करीब दो सौ मीटर का फासला है और इस फासले में तब घना जंगल था। बस बीच-बीच में नहर विभाग की कोई कोठी दिख जाती तब कुछ नजर आता। असाढ़ या सावन का महीना रहा होगा। नहर के किनारे जंगल की तरफ के पेड़ आम के पके फलों से लदे थे। डालियां झुकी हुई पानी को छू रही थीं, कहीं-कहीं जामुन के पेड़ और इनके बीच पनीले सांप का गुच्छा। मेरे बंगाली साथी बाबू मुखर्जी मोशाय तो एकदम भावुक हो उठे और बोले कि प्रकृति को अगर प्यार किया जाए तो वह इतना देती है कि इंसान सोच नहीं सकता। लेकिन फिर सिर्फ और सिर्फ उसको ही प्यार करना पड़ेगा। आपने उसकी तरफ से मुंह फेरा नहीं कि वह ऐसा बदला लेगी कि जीवन भर याद रहेगा। आज जब प्रकृति पर विकास के नाम पर डाका डाला जा रहा है, तो इसी का नतीजा है कि कभी केदारनाथ जैसे हादसे होते हैं तो कभी भूकम्प आते हैं। मैं जब भी जंगलों को कटते हुए देखता हूं अथवा रोज-ब-रोज सूखती जा रही नहरों को तो मुझे लगता है कि यह सब प्रकृति से छेड़छाड़ का ही दुष्परिणाम है। आज जिस तरह से कुछ शहरों का तो असीमित विस्तार हो रहा है और कुछ शहर जनशून्य होते जा रहे हैं तो इसका एक ही कारण है कि हम अपनी प्रकृति को यथावत नहीं रख पा रहे। अगर हमें अपनी प्रकृति को बचाना है तो हमें अपने जंगल और अपने जल के स्रोतों को बचाना होगा। तब ही हम अपने देश की इस विविधता को बचा पाएंगे।

शब्द सामर्थ्य Shabd Samarth

बाएं से दाएं
1. थकान, शिथिलता 3. समर्थवान 5. सिलसिला, जोड़मेल 6. आलसी, अलसाय हुआ 8. गुलाम, सेवक,नौकर 10. नर्म, मुलायम, कोमल 13. सूर्य, सूरज 14. अधीनता, मातहत, अंतर्गत 17. पढ़ने का सार्वजनिक स्थान 19. ईमानवाला, जो बेईमान न हो 22. खेत जोतने का यंत्र, समाधान 23. संतप्त, दुःखी, उदास 24. किस्सा, कहानी.

ऊपर से नीचे
2. आंखों में लगाया जाने वाला काला पदार्थ, अंजन 3. मध्य प्रदेश की एक जिला 4. क्षमा करने योग्य 5. तारने वाला, उद्धारक 6. धरोहर, थाती 7. कुशल, कुशलता पूर्वक 8. पत्नी, भार्या 9. विनतीपूर्वक, बाअदब 11. मार्गदर्शक, पथप्रदर्शक (उर्दू) 12. औरत, नारी 15, आवारापन 16. आश्रय, सहारा, शरण 18. किसी चीज को पाने की तीव्र इच्छा 19. भगवान, ईश्वर 20. गमन न करने वाला, पहाड़, बहूमूल्य पत्थर, संख्या सूचक एक शब्द 21. मूल्य, कीमत.

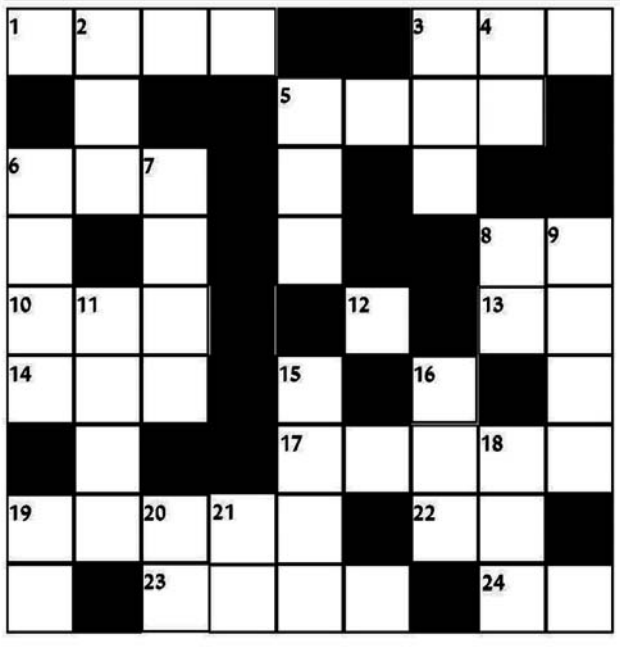

पिछले अंक का हल

बे	चै	न	■	प	ना	ह	■	■
व	■	वा	■	रि	श्ता	■	■	मा
फा	र	सी	■	वा	■	म	न्न	त
■	सी	■	द	र	वा	जा	■	ह
ब	द	मा	श	■	द	ल	ग	त
हू	■	न	ह	र	■	■	हा	■
■	स	हा	रा	■	म	हा	रा	जा
■	श	नि	■	भा	र्या	■	ई	■
ग	र्त	■	व	र	दा	न	■	■

सू-दोकू

	6	3		8		1		4
8			3		4		7	
	4			5		8		
3		8			1		4	
	1			4		9		7
		4			2		1	
1				3		4		8
	8		2		9		3	
		9		1		2		5

नियम
1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

पिछले अंक का हल

6	7	9	2	4	5	3	1	8
2	1	8	3	7	6	9	5	4
7	6	4	5	2	8	1	3	9
3	8	1	6	9	7	2	4	5
9	2	5	4	1	3	8	6	7
8	3	7	9	6	4	5	2	1
5	4	2	8	3	1	7	9	6
1	9	6	7	5	2	4	8	3
4	5	3	1	8	9	6	7	2

राशि-फल

मेष- अधिकारियों से अनबन नुकसानदायक रहेगी। क्रोध पर नियंत्रण बनाये रखें।

वृष- आप व्यापारी हैं तो आज अनावश्यक अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। सरकारी नौकर हैं तो वरिष्ठ अधिकारी की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

मिथुन- दिन के पूर्वार्ध में कुछ लाभ की संभावना है। नौकरी व्यवसाय से जुड़े मुद्दे हल होंगे।

कर्क- आज आप अपने आप में मस्त रहेंगे। किसी भी विरोधी की आलोचना की ओर ध्यान न देकर अपना काम करते रहें।

सिंह- शत्रुजनित षड्यंत्र, लोकोपवाद से बचने का प्रयास करें। अनावश्यक दुःश्चिन्ताओं से मन क्षुब्ध हो सकता है।

कन्या- आज कर्मोद्योग में तत्परता से लाभ होगा। रचनात्मक कार्यों में मन लगेगा। विपरीत परिस्थिति उत्पन्न होने पर क्रोध पर काबू रखें।

तुला- आज पद एवं अधिकार की महत्वाकांक्षा अन्तर्विरोध को जन्म देगी। समस्याओं का उचित समाधान न मिलने से मानसिक अशान्ति रहेगी।

वृश्चिक- आज का दिन कुछ विशेष उधेड़बुन में बीतेगा। अधिकारीवर्ग से अच्छी साठ-गांठ बनेगी।

धनु- किसी विशेष घटनाक्रम के अंतर्गत रुका धन आश्चर्यजनक रूप से प्राप्त हो सकता है।

मकर- कार्यक्षेत्र में अपने से वरिष्ठ अधिकारियों से अनबन हो सकती है। दाम्पत्य जीवन में सरसता बनी रहेगी।

कुंभ- वाहन, भूमि खरीदने, स्थान परिवर्तन का सुखद संयोग भी बन सकता है।

मीन- किसी प्रतियोगिता में आपकी जीत हो सकती है। किसी खास उपलब्धि से भी आपका मन प्रसन्न रहेगा, किन्तु मौसम परिवर्तन का स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है।